

سُورَةُ الْحَجِّ

Surah 15 — Al-Hijr (The Rock) • Meccan • 99 Ayahs • Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ۝ تِلْكَ آيَاتُ الْكِتَابِ وَقُرْآنٍ مُبِينٍ ۝

अलिफ़ लाम रा ये किताब (खुदा) और वाजेए व रौशन कुरान की (चन्द) आयते हैं

2

رُبَّمَا يَوَدُّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ لَوْ كَانُوا مُسْلِمِينَ ۝

(एक दिन वह भी आने वाला है कि) जो लोग काफ़िर हो बैठे हैं अक्सर दिल से चाहेंगे

3

ذَرَهُمْ يَأْكُلُوا ۖ وَيَتَمَتَّعُوا ۖ وَيُلْهَهُمُ الْأَمَلُ ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ۝

काश (हम भी) मुसलमान होते (ऐ रसूल) उन्हें उनकी हालत पर रहने दो कि खा पी लें और (दुनिया के चन्द रोज़) चैन कर लें और उनकी तमन्नाएँ उन्हें खेल तमाशे में लगाए रहीं

4

وَمَا أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَّعْلُومٌ ۝

अनक़रीब ही (इसका नतीजा) उन्हें मालूम हो जाएगा और हमने कभी कोई बस्ती तबाह नहीं की मगर ये कि उसकी तबाही के लिए (पहले ही से) समझी बूझी मियाद मुक़रर लिखी हुई थी

5

مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَخِرُونَ ۝

कोई उम्मत अपने वक्त से न आगे बढ़ सकती है न पीछे हट सकती है

6

وَقَالُوا ۖ يَأْيُهَا الَّذِي نَزَّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُونٌ ۝

(ऐ रसूल कुफ़ारे मक्का तुमसे) कहते हैं कि ऐ शरूफ़ (जिसको ये भ्रम है) कि उस पर 'वही' व किताब नाज़िल हुई है तो (अच्छा खासा) सिड़ी है

7

لَوْ مَا تَأْتِينَا بِالْمَلَكَةِ إِن كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ

अगर तू अपने दावे में सच्चा है तो फरिश्तों को हमारे सामने क्यों नहीं ला खड़ा करता

8

مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ اِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوْۤا۟ اِذْۢا مُّنْظَرِيْنَ

(हालाँकि) हम फरिश्तों को खुल्लम खुल्ला (जिस अज़ाब के साथ) फैसले ही के लिए भेजा करते हैं और (अगर फरिश्ते नाज़िल हो जाए तो) फिर उनको (जान बचाने की) मोहलत भी न मिले

9

اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ۟ لَحٰفِظُوْنَ

बेशक हम ही ने कुरान नाज़िल किया और हम ही तो उसके निगेहबान भी हैं

10

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ شِيْعِ الْاَوَّلِيْنَ

(ऐ रसूल) हमने तो तुमसे पहले भी अगली उम्मतों में (और भी बहुत से) रसूल भेजे

11

وَمَا يَأْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْۤا۟ بِهٖ۟ يَسْتَهْزِءُوْنَ

और (उनकी भी यही हालत थी कि) उनके पास कोई रसूल न आया मगर उन लोगों ने उसकी हँसी ज़रूर उड़ाई

12

كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ۟ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ

हम (गोया खुद) इसी तरह इस (गुमराही) को (उन) गुनाहगारों के दिल में डाल देते हैं

13

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ۟ ۝۱ ۝۲ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ

ये कुफ़्फ़ार इस (कुरान) पर ईमान न लाएँगे और (ये कुछ अनोखी बात नहीं) अगलों के तरीके भी (ऐसे ही) रहें हैं

14

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ۝۱ مِّنَ السَّمَآءِ فَظَلُّوْۤا۟ فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ

और अगर हम अपनी कुदरत से आसमान का एक दरवाज़ा भी खोल दें और ये लोग दिन दहाड़े उस दरवाज़े से (आसमान पर) चढ़ भी जाएँ

15

لَقَالُوا ۖ إِنَّمَا سُكِّرَتْ أَبْصَرُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُورُونَ ۚ

तब भी यहीं कहेंगे कि हो न हो हमारी आँखें (नज़र बन्दी से) मतवाली कर दी गई हैं या नहीं तो हम लोगों पर जादू किया गया है

16

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَاءِ بُرُوجًا ۖ وَزَيَّنَّاهَا لِلنَّاظِرِينَ

और हम ही ने आसमान में बुर्ज बनाए और देखने वालों के वास्ते उनके (सितारों से) आरास्ता (सजाया) किया

17

وَحَفِظْنَاهَا مِنْ كُلِّ شَيْطَٰنٍ رَّجِيمٍ ۚ

और हर शैतान मरदूद की आमद रफत (आने जाने) से उन्हें महफूज़ रखा

18

إِلَّا مَنْ أَسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاتَّبَعَهُ ۚ شِهَابٌ مُّبِينٌ ۚ

मगर जो शैतान चोरी छिपे (वहाँ की किसी बात पर) कान लगाए तो यहबाब का दहकता हुआ योला उसके (खदेड़ने को) पीछे पड़ जाता है

19

وَالْأَرْضَ مَدَدْنَاهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوْسِيَ وَأَنزَلْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُونٍ ۚ

और ज़मीन को (भी) अपने मखलूक़ात के रहने सहने को) हम ही ने फैलाया और इसमें (कील की तरह) पहाड़ों के लंगर डाल दिए और हमने उसमें हर किस्म की मुनासिब चीज़ें उगाई

20

وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيهَا مَعِيشَٰ وَمَنْ لَّسْتُمْ لَهُ ۚ بَرِّزِقِينَ

और हम ही ने उन्हें तुम्हारे वास्ते ज़िन्दगी के साज़ों सामान बना दिए और उन जानवरों के लिए भी जिन्हें तुम रोज़ी नहीं देते

21

وَإِنْ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا خَزَائِنُهُ ۚ وَمَا نُنْزِلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ ۚ

और हमारे यहाँ तो हर चीज़ के बेशुमार खज़ाने (भरे) पड़े हैं और हम (उसमें से) एक जची तली मिक्कदार भेजते रहते हैं

22

وَأَرْسَلْنَا الرِّيحَ لَوْفِحَ فَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً ۚ فَأَسْقَيْنُكُمُوهُ وَمَا أَنْتُمْ لَهُ ۚ بِخَزَنِينَ

और हम ही ने वह हवाएँ भेजी जो बादलों को पानी से (भरे हुए) है फिर हम ही ने आसमान से पानी बरसाया फिर हम ही ने तुम लोगों को वह पानी पिलाया और तुम लोगों ने तो कुछ उसको जमा करके नहीं रखा था

23

وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْيِ ۚ وَنُمِيتُ وَنَحْنُ الْوَارِثُونَ

और इसमें शक नहीं कि हम ही (लोगों को) जिलाते और हम ही मार डालते हैं और (फिर) हम ही (सब के) वाली वारिस हैं

24

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِينَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَخْرِينَ

और बेशक हम ही ने तुममें से उन लोगों को भी अच्छी तरह समझ लिया जो पहले हो गुज़रे और हमने उनको भी जान लिया जो बाद को आने वाले हैं

25

وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ۚ إِنَّهُ ۚ حَكِيمٌ عَلِيمٌ ۚ

और इसमें शक नहीं कि तेरा परवरदिगार वही है जो उन सब को (क़यामत में कब्रों से) उठाएगा बेशक वह हिकमत वाला वाकिफकार है

26

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَلٍ ۚ مِنْ حَمَإٍ ۚ مَسْنُونٍ ۚ

और बेशक हम ही ने आदमी को खमीर (गुंधी) दी हुई सड़ी मिट्टी से जो (सूखकर) खन खन बोलने लगे पैदा किया

27

وَالْجَانَّ خَلَقْنَاهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَارِ السَّمُومِ

और हम ही ने जिन्नात को आदमी से (भी) पहले वे धुएँ की तेज़ आग से पैदा किया

28

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلَأِكَةِ إِنِّي خَلَقْتُ ۚ بَشَرًا ۚ مِّنْ صَلْصَلٍ ۚ مِّنْ حَمَإٍ ۚ مَسْنُونٍ ۚ

और (ऐ रसूल वह वक्त याद करो) जब तुम्हारे परवरदिगार ने फरिश्तों से कहा कि मैं एक आदमी को खमीर दी हुई मिट्टी से (जो सूखकर) खन खन बोलने लगे पैदा करने वाला हूँ

فَإِذَا سَوَّيْتُهُۥ ۖ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُّوحِي فَقَعُوا۟ لَهُۥ ۖ سَاجِدِينَ

तो जिस वक्त मैं उसको हर तरह से दुरुस्त कर चुके और उसमें अपनी (तरफ से) रुह फूँक दूँ तो सब के सब उसके सामने सजदे में गिर पड़ना

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ

गरज फरिश्ते तो सब के सब सर ब सजूद हो गए

إِلَّا إِبْلِيسَ أَبَىٰ أَنْ يَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ

मगर इबलीस (मलऊन) की उसने सजदा करने वालों के साथ शामिल होने से इन्कार किया

قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ السَّاجِدِينَ

(इस पर खुदा ने) फरमाया आओ शैतान आखिर तुझे क्या हुआ कि तू सजदा करने वालों के साथ शामिल न हुआ

قَالَ لَمْ أَكُنْ لِأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُۥ ۖ مِنْ صَلْصَلٍ ۖ مِنْ حَمَإٍ ۖ مَّسْنُونٍ ۖ

वह (ढिठाई से) कहने लगा मैं ऐसा गया गुजरा तो हूँ नहीं कि ऐसे आदमी को सजदा कर बैटूँ जिसे तूने सड़ी हुई खन खन बोलने वाली मिट्टी से पैदा किया है

قَالَ فَأَخْرِجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَاجِعٌ ۖ

खुदा ने फरमाया (नहीं तू) तो बेहशत से निकल जा (दूर हो) कि बेशक तू मरदूद है

وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَىٰ يَوْمِ الدِّينِ

और यक्रीनन तुझ पर रोज़े में जज़ा तक फिटकार बरसा करेगी

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ

शैतान ने कहा ऐ मेरे परवरदिगार खैर तू मुझे उस दिन तक की मोहलत दे जबकि (लोग दोबारा ज़िन्दा करके) उठाए जाएँगे

37

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ

खुदा ने फरमाया वक्त मुकर्रर

38

إِلَى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ

के दिन तक तुझे मोहलत दी गई

39

قَالَ رَبِّ بِمَا أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ

उन शैतान ने कहा ऐ मेरे परवरदिगार चूँकि तूने मुझे रास्ते से अलग किया मैं भी उनके लिए दुनिया में (साज़ व सामान को) उम्दा कर दिखाऊँगा और सबको ज़रूर बहकाऊंगा

40

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ

मगर उनमें से तेरे निरे खुरे खास बन्दे (कि वह मेरे बहकाने में न आएँगे)

41

قَالَ هَذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ

खुदा ने फरमाया कि यही राह सीधी है कि मुझ तक (पहुँचती) है

42

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ إِلَّا مَنْ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ

जो मेरे मुखलिस (खास बन्दे) बन्दे हैं उन पर तुझसे किसी तरह की हुकूमत न होगी मगर हाँ गुमराहों में से जो तेरी पैरवी करे (उस पर तेरा वार चल जाएगा)

43

وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ

और हाँ ये भी याद रहे कि उन सब के वास्ते (आखिरी) वायदा बस जहन्न ुम है जिसके सात दरवाजे होंगे

44

لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ ۚ لِكُلِّ بَابٍ ۚ مِنْهُمْ جُزْءٌ ۚ مَّقْسُومٌ

हर (दरवाज़े में जाने) के लिए उन गुमराहों की अलग अलग टोलियाँ होंगी

45

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ

और परहेज़गार तो बेहश्त के बाग़ों और चश्मों में यक़ीनन होंगे

46

أَدْخُلُوهَا بِسَلَامٍ ءَامِنِينَ

(दाख़िले के वक़्त फ़रिश्ते कहेंगे कि) उनमें सलामती इत्मिनान से चले चलो

47

وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِّنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلَىٰ سُرُرٍ مُّتَقَابِلِينَ

और (दुनिया की तकलीफ़ों से) जो कुछ उनके दिल में रंज था उसको भी हम निकाल देंगे और ये बाहम एक दूसरे के आमने सामने तख़्तों पर इस तरह बैठे होंगे जैसे भाई भाई

48

لَا يَمَسُّهُمْ فِيهَا نَصَبٌ ۚ وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرَجِينَ

उनको बेहश्त में तकलीफ़ छुएगी भी तो नहीं और न कभी उसमें से निकाले जाएँगे

49

ۚ نَبِيُّ عِبَادِيَ أَنِّي أَنَا الْغَفُورُ الرَّحِيمُ

(ऐ रसूल) मेरे बन्दों को आगाह करो कि बेशक मैं बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान हूँ

50

وَأَنَّ عَذَابِي هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيمُ

मगर साथ ही इसके (ये भी याद रहे कि) बेशक मेरा अज़ाब भी बड़ा दर्दनाक अज़ाब है

51

وَنَبِّئُهُمْ عَن ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ

और उनको इबराहीम के मेहमान का हाल सुना दो

52

إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ فَقَالُوا ۖ سَلَامٌ ۚ قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُونَ

कि जब ये इबराहीम के पास आए तो (पहले) उन्होंने सलाम किया इबराहीम ने (जवाब सलाम के बाद) कहा हमको तो तुम से डर मालूम होता है

قَالُوا ۚ لَا تَوَجَّلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلْمٍ عَلِيمٍ ۚ

उन्होंने कहा आप मुत्तालिक् खौफ न कीजिए (क्योंकि) हम तो आप को एक (दाना व बीना) फरज़न्द (के पैदाइश) की खुशखबरी देते हैं

قَالَ أَبَشِّرْتُمُونِي عَلَىٰ أَنْ مَسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُونَ

इब्राहिम ने कहा क्या मुझे खुशखबरी (बेटा होने की) देते हो जब मुझे बुढ़ापा छा गया

قَالُوا ۚ بَشِّرْكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُن مِّنَ الْقَنِطِينَ

तो फिर अब काहे की खुशखबरी देते हो वह फरिश्ते बोले हमने आप को बिल्कुल ठीक खुशखबरी दी है तो आप (बारगाह खुदा बन्दी से) ना उम्मीद न हो

قَالَ وَمَنْ يَقْنَطُ مِن رَّحْمَةِ رَبِّهِ ۖ إِلَّا الضَّالُّونَ

इबराहीम ने कहा गुमराहों के सिवा और ऐसा कौन है जो अपने परवरदिगार की रहमत से ना उम्मीद हो

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُونَ

(फिर) इबराहीम ने कहा ऐ (खुदा के) भेजे हुए (फरिश्तों) तुम्हें आखिर क्या मुहिम दर पेश है

قَالُوا ۚ إِنَّا أُرْسِلْنَا إِلَىٰ قَوْمٍ مُّجْرِمِينَ

उन्होंने कहा कि हम तो एक गुनाहगार कौम की तरफ (अज़ाब नाज़िल करने के लिए) भेजे गए हैं

إِلَّا عَالِ لُوطٍ إِنَّا لَمُنَجُّوهُمْ أَجْمَعِينَ

मगर लूत के लड़के वाले कि हम उन सबको ज़रूर बचा लेंगे मगर उनकी बीबी जिसे हमने ताक लिया है

إِلَّا امْرَأَتَهُ ۖ قَدَرْنَا ۚ إِنَّهَا لَمِنَ الْغَابِرِينَ

कि वह ज़रूर (अपने लड़के बालों के) पीछे (अज़ाब में) रह जाएगी

61

فَلَمَّا جَاءَ ءَالَ لُوطٍ الْمُرْسَلُونَ

गरज जब (खुदा के) भेजे हुए (फरिश्ते) लूत के बाल बच्चों के पास आए तो लूत ने कहा कि तुम तो (कुछ) अजनबी लोग (मालूम होते हो)

62

قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُنْكَرُونَ

फरिश्तों ने कहा (नहीं) बल्कि हम तो आपके पास वह (अज़ाब) लेकर आए हैं

63

قَالُوا؟ بَلْ جِنَّتُكَ بِمَا كَانُوا؟ فِيهِ يَمْتَرُونَ

जिसके बारे में आपकी क्रौम के लोग शक रखते थे

64

وَأَتَيْنَكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ

(कि आए न आए) और हम आप के पास (अज़ाब का) कलई (सही) हुक्म लेकर आए हैं और हम बिल्कुल सच कहते हैं

65

فَأَسْرِبْ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ اللَّيْلِ وَاتَّبِعْ أَدْبُرَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ وَأَمْضُوا؟
حَيْثُ تُؤْمَرُونَ

बस तो आप कुछ रात रहे अपने लड़के बालों को लेकर निकल जाइए और आप सब के सब पीछे रहिएगा और उन लोगों में से कोई मुड़कर पीछे न देखे और जिधर (जाने) का हुक्म दिया गया है (शाम) उधर (सीधे) चले जाओ और हमने लूत के पास इस अम्र का कतई फैसला कहला भेजा

66

وَقَضَيْنَا إِلَيْهِ ذَلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ هَؤُلَاءِ مَقْطُوعٌ مُّصْبِحِينَ

कि बस सुबह होते होते उन लोगों की जड़ काट डाली जाएगी

67

وَجَاءَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ يَسْتَبْشِرُونَ

और (ये बात हो रही थीं कि) शहर के लोग (मेहमानों की खबर सुन कर बुरी नीयत से) खुशियाँ मनाते हुए आ पहुँचे

68

قَالَ إِنَّ هَؤُلَاءِ ضَيْفِي فَلَا تَفْضَحُونِ

लूत ने (उनसे कहा) कि ये लोग मेरे मेहमान हैं तो तुम (इन्हें सताकर) मुझे रुसवा बदनाम न करो

69

وَاتَّقُوا ۚ اللَّهَ وَلَا تُخْزُونِ

और खुदा से डरो और मुझे ज़लील न करो

70

قَالُوا ۚ أَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعُلَمِينَ

वह लोग कहने लगे क्यों जी हमने तुम को सारे जहाँ के लोगों (के आने) की मनाही नहीं कर दी थी

71

قَالَ هَؤُلَاءِ بَنَاتِي إِنْ كُنْتُمْ فَعِلِينَ

लूत ने कहा अगर तुमको (ऐसा ही) करना है तो ये मेरी क़ौम की बेटियाँ मौजूद हैं

72

لَعَمْرُكَ إِنَّهُمْ لَفِي سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُونَ

(इनसे निकाह कर लो) ऐ रसूल तुम्हारी जान की कसम ये लोग (क़ौम लूत) अपनी मस्ती में मदहोश हो रहे थे

73

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِينَ

(लूत की सुनते काहे को) गरज़ सूरज निकलते निकलते उनको (बड़े ज़ोरो की) चिघाड़ न ले डाला

74

فَجَعَلْنَا عَلَيْهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً ۚ مِنْ سِجِّيلٍ

फिर हमने उसी बस्ती को उलट कर उसके ऊपर के तबके को नीचे का तबका बना दिया और उसके ऊपर उन पर खरन्जे के पत्थर बरसा दिए इसमें शक नहीं कि इसमें (असली बात के) ताड़ जाने वालों के लिए (कुदरते खुदा की) बहुत सी निशानियाँ हैं

75

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَاتٍ ۚ لِلْمُتَوَسِّمِينَ

और वह उलटी हुई बस्ती हमेशा (की आमदरफ्त)

76

وَأَنَّهَا لَبِسَبِيلٍ ۚ مُقِيمٍ

के रास्ते पर है

77

إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۚ لِلْمُؤْمِنِينَ

इसमें तो शक हीं नहीं कि इसमें ईमानदारों के वास्ते (कुदरते खुदा की) बहुत बड़ी निशानी है

78

وَإِنْ كَانَ أَصْحَابُ الْأَيْكَةِ لَظَالِمِينَ

और ऐका के रहने वाले (क्रौमे शुएब की तरह बड़े सरकश थे)

79

فَأَنْتَقَمْنَا مِنْهُمْ وَإِنَّهُمَا لَبِإِمَامٍ ۚ مُبِينٍ ۚ

तो उन से भी हमने (नाफरमानी का) बदला लिया और ये दो बस्तियाँ (क्रौमे लूत व शुएब की) एक खुली हुई यह राह पर (अभी तक मौजूद) हैं

80

وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحَابُ الْحَجَرِ الْمُرْسَلِينَ

और इसी तरह हिज्र के रहने वालों (क्रौम सालेह ने भी) पैग़म्बरों को झुठलाया

81

وَعَاتَيْنَهُمْ آيَاتِنَا فَكَانُوا ۚ عَنْهَا مُعْرِضِينَ

और (बावजूद कि) हमने उन्हें अपनी निशानियाँ दी उस पर भी वह लोग उनसे रद्द गिरदानी करते रहे

82

وَكَانُوا ۚ يَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا ءَامِنِينَ

और बहुत दिल जोई से पहाड़ों को तराश कर घर बनाते रहे

83

فَأَخَذَتْهُمْ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِينَ

आखिर उनके सुबह होते होते एक बड़ी (जोरों की) चिंघाड़ ने ले डाला

فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا؟ يَكْسِبُونَ

फिर जो कुछ वह अपनी हिफाज़त की तदबीर किया करते थे (अज़ाब खुदा से बचाने में) कि कुछ भी काम न आयी

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ؟ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَءَاتِيَةٌ؟
فَأَصْفَحْ الصَّفْحَ الْجَمِيلَ

और हमने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उन दोनों के दरमियान में है हिकमत व मसलहत से पैदा किया है और क़यामत यकीनन ज़रूर आने वाली है तो तुम (ऐ रसूल) उन काफ़िरो से शाइस्ता उनवान (अच्छे बरताव) के साथ दर गुज़र करो

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلْقُ الْعَلِيمُ

इसमें शक़ नहीं कि तुम्हारा परवरदिगार बड़ा पैदा करने वाला है

وَلَقَدْ آتَيْنَاكَ سَبْعًا؟ مِّنَ الْمَثَانِي وَالْقُرْآنَ الْعَظِيمَ

(बड़ा दाना व बीना है) और हमने तुमको सबए मसानी (सूरे हम्द) और कुरान अज़ीम अता किया है

لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلَىٰ مَا مَتَّعْنَا بِهِ؟ أَزَوْجًا؟ مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَأَخْفِضْ
جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِينَ

और हमने जो उन कुफ़ारों में से कुछ लोगों को (दुनिया की) माल व दौलत से निहाल कर दिया है तुम उसकी तरफ़ हरगिज़ नज़र भी न उठाना और न उनकी (बेदीनी) पर कुछ अफ़सोस करना और ईमानदारों से (अगरचे ग़रीब हो) झुककर मिला करो और कहा दो कि मैं तो (अज़ाबे खुदा से) सरीही तौर से डराने वाला हूँ

وَقُلْ إِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْمُبِينُ

(ऐ रसूल) उन कुफ़ारों पर इस तरह अज़ाब नाज़िल करेंगे जिस तरह हमने उन लोगों पर नाज़िल किया

كَمَا أَنزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِينَ

जिन्होंने कुरान को बाँट कर टुकड़े टुकड़े कर डाला

91

الَّذِينَ جَعَلُوا[ۙ] الْقُرْءَانَ عِضِينَ

(बाज़ को माना बाज़ को नहीं) तो ऐ रसूल तुम्हारे ही परवरदिगार की (अपनी) कसम

92

فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ

कि हम उनसे जो कुछ ये (दुनिया में) किया करते थे (बहुत सख्ती से) ज़रूर बाज़ पुर्स (पुछताछ) करेंगे

93

عَمَّا كَانُوا[ۙ] يَعْمَلُونَ

पस जिसका तुम्हें हुक्म दिया गया है उसे वाजेए करके सुना दो

94

فَأَصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ

और मुशरेकीन की तरफ से मुँह फेर लो

95

إِنَّا كَفَيْنَاكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ

जो लोग तुम्हारी हँसी उड़ाते है

96

الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ[ۙ] فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ

और खुदा के साथ दूसरे परवरदिगार को (शरीक) ठहराते हैं हम तुम्हारी तरफ से उनके लिए काफी हैं तो अनकरीब ही उन्हें मालूम हो जाएगा

97

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُولُونَ

कि तुम जो इन (कुफ़ारों मुनाफ़िक़ीन) की बातों से दिल तंग होते हो उसको हम ज़रूर जानते हैं

98

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِنَ السَّاجِدِينَ

तो तुम अपने परवरदिगार की हम्दो सना से उसकी तस्बीह करो और (उसकी बारगाह में) सजदा करने वालों में हो जाओ

وَأَعْبُدْ رَبَّكَ حَتَّىٰ يَأْتِيَكَ الْيَقِينُ

और जब तक तुम्हारे पास मौत आए अपने परवरदिगार की इबादत में लगे रहो